YouTube Please Subscribe

(वीर रस)

परिभाषा :–

जब 'उत्साह' नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव व्यभिचारी/संचारी भावों द्वारा पुष्ट होता है, तब 'वीर रस' की निष्पत्ति होती है।

उदाहरण – "सामने टिकते नहीं वनराज, पर्वत डोलते हैं,
काँपता है कुण्डली मारे समय का व्याल
मेरी बाँहों में मारुत गरुड़ गजराज का बल है।"

स्पष्टीकरण :–

स्थायी भाव :– उत्साह

आलम्बन विभाव :– हिंसक पशु/अत्याचारी शत्रु

उद्दीपन विभाव :– वीर/शत्रु का पराक्रम/अहंकार/यश की इच्छा

अनुभाव :– रोमांच, गर्वपूर्ण उक्ति, कम्प, धर्मानुकूल आचरण

संचारी भाव :– उग्रता, आवेश, चपलता, स्मृति, हर्ष, उत्सुकता असूया आदि। द्वारा वीर रस की निष्पत्ति होती है।

Gyansindhu Coaching Classes

[अन्य उदाहरण]

↓

Like & Share

Scanned by CamScanner

आये होंगे यदि भरत कुमति-वश वन में,
तो मैंने यह संकल्प किया है मन में—
उनको इस शर का लक्ष्य चुनूँगा क्षण में,
प्रतिषेध आपका भी न सुनूँगा रण में।

Scanned by CamScanner

क्रुद्ध दशानन बीस भुजानि सो लै कपि रीछ अनी सर बट्टत।
लच्छन तच्छन रक्त किए दृग लच्छ विपच्छन के सिर कट्टत॥
मार पछारु पुकारे दुहूँ दल, रुण्ड झपट्टि दपट्टि लपट्टत।
रुण्ड लरै भट मत्थनि लुट्टत जोगिनि खप्पर ठट्टनि ठट्टत॥

Scanned by CamScanner

कैधौं ब्योमबीथिका भरे हैं भूरि धूमकेतु,
बीर-रस बीर तरवारि सी उघारी है।
तुलसी सुरेस चाप, कैंधौं दामिनी कलाप,
कैंधों चली मेरु तें कृसानु-सरि भारी है।

Scanned by CamScanner